समतापूर्ण समाज के अग्रदूत : डॉ0 राममनोहर लोहिया

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डी0 एस0 एम0 राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

भारतीय समाज और समाजवाद के लिए डॉ0 राममनोहर लोहिया 'जाति' को सबसे बड़ी बाधा मानते थे उनकी मान्यता थी की जाति ने समाज में ऊंच–नीच, छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब की खाईं पैदा की है इसीलिए उन्होंने नारा दिया 'जाति तोड़ो'–वह लिखते हैं–''जाति, देश को तोड़ रही है। वह संतुष्टि, ढर्रे और निश्चलता के बहुसंख्यक छोटे–छोटे पोखरे बनाती है। हर एक पोखर को अपने छोटे घेरे की भलाई में ही दिलचस्पी रहती है। मूल्यों की एक विषम सीढ़ी ने हर एक जाति को कुछ दूसरी जातियों से ऊपर खड़ा कर दिया है और ऐसी–ऐसी कथा–कहानियाँ हैं जिनमें ऊपर वाली जाति को उसकी कपटता और धोखेबाजी के लिए कोसा गया है, इसलिए एक अजीब आध्यात्मिक संतोष छा गया है। तीर्थ–केन्द्रों' और राष्ट्रीय एकता को वे जो परिवेष्ठित करते हैं सो वह इसी संतुष्टि के अंग हैं। हर एक छोटा पोखर आता है और समूचे देश में छितराये हुए देवी–देवताओं के ऊपर अपने गंदे पानी की बूँदे टपका जाता है और अपने आपको पवित्र और उन्नत समझने लगता है। अगर ये पोखर अपने घेरे तोड़कर भारतीय राष्ट्रीयता का महासागर बनाएँ तो क्या फिर भी वे आयेंगे। कुछ लोग कहेंगे कि ''जाति की कीमत चुकाए बिना तीर्थ–केन्द्रों को रखना मेरी बेवकूफी है। अपनी मूर्खता मैं जारी रखना चाहता हूँ, पर यह बात कहने के लिए मेरा दिमाग साफ है कि अगर जाति के बिना तीर्थ–केन्द्र जीवित नहीं रह सकते हैं तो उन्हें भी खतम करना होगा।''[1] डॉ0 लोहिया की धारणा थी कि जाति ने हमें संकुचित किया है जिसकी वजह से हमारे ज्ञान–विज्ञान का उतना प्रसार नहीं हुआ जितना कि होना चाहिए था वह लिखते हैं कि –''जाति ने देश के प्राण को एक मानी में खतरा बनने का काम किया है, जितना संसार में और कहीं नहीं हुआ।''[2] वस्तुतः जाति–प्रथा वर्ण व्यवस्था का ही एक अंग है जिसकी जड़ें भारतीय समाज में गहरी हैं इसीलिए असमानता की खाईं भी उथली नहीं है। क्योंकि भारतीय समाज बहुत पुराने समय से विभिन्न वर्णो, जातियों और उपजातियों में बँटा हुआ है। उस समय इस वर्ण व्यवस्था और जाति–प्रथा का चाहे जो औचित्य रहा हो, परन्तु वास्तविकता यह है कि इस वर्ण व्यवस्था और जाति–प्रथा ने भारतीय जनता को ऊँच और नीच की कई श्रेणियों में बाँट दिया। इससे संपूर्ण समाज की बनावट असमानता पर आधारित हो गई।''[3]

संसार के अन्य चिन्तक जहांh वर्ग–संघर्ष को समाप्त करने के लिए कहते हैं कि सभी लोगों को समान अवसर देकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है, वहीं डा0 लोहिया भारतीय समाज को एक मौलिक एवं नवीन विचार देते हैं और कहते हैं कि सैंकड़ों में साठ स्थान संसार में उन लोगों को मिलने चाहिए, जो अब तक किसी के द्वारा प्रताड़ित होते चले आये हैं। भारतीय समाज में कुछ जातियों को हमेशा परेशान किया गया है और कहा गया है कि वे अछूत हैं, पिछड़े हैं, उन्हें लक्षित एवं अपमानित किया गया है ऐसे वर्ग में डा0 लोहिया स्त्रियों एवं अल्पसंख्यकों को मानते हैं और कहते हैं कि उन लोगों को सभी सार्वजनिक नौकरियों और पदों पर सैकड़ों में साठ प्रतिशत स्थान दिये जायें। डा0 लोहिया तब तक इस व्यवस्था को कायम रखना

चाहते है , जब तक कथित द्विज जाति एवं पिछड़ी जाति के लोग एक धरातल पर न आ जायें। जिस दिन दोनों एक धरातल पर आ जायेंगें,उसी दिन विशेष सामान्य ढंग से कार्य होने लगेगा, फिर सभी लोगों को एक ही मानदण्ड पर व्यवहार मिलेगा तथा वे अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करने लगेगें।

डॉ0 लोहिया जाति–प्रथा जैसी अनेक रूढ़ियों एवं गुलामी से मुक्ति के लिए एक बड़े आन्दोलन की आवश्यकता महसूस करते थे इसके लिए आपने समाजवाद को मूर्त रूप देने के लिए 'सात क्रान्तियों''[4] के सिद्धान्त का आह्वान किया यथा –

1. नर–नारी की समानता के लिये।
2. चमड़ी के रंग पर रची राजकीय,आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ।
3. संस्कारगत, जन्मजात जातिप्रथा के खिलाफ पिछड़ों को विशेष अवसर देने के लिये।
4. विदेशी गुलामी के खिलाफ और स्वतंत्रता और विश्व लोक राज के लिये।
5. निजी पूंhजी की विषमताओं के खिलाफ और आर्थिक समानता के लिये तथा योजना द्वारा पैदावार बढ़ाने के लिये।
6. निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ और लोकतंत्रीय पद्धति के लिये
7. अस्त्र–शस्त्र के खिलाफ और सत्याग्रह के लिये ।

आपका मानना था कि क्रान्तियाh समाज को एक नए सिरे से गढ़ती है।(मार्क्स,गाhधी एण्ड सोशलिज्म से) जब तक हम इन क्रांतियों के लिये कार्य नहीं करेंगे तब तक समाजवाद के व्यापक सिद्धांhत को व्यवहारिक रूप नहीं दे सकेगें।

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ कोई भी विचारक या विचारधारा धर्म की उपेक्षा करके नहीं चल सकती इसीलिए जब प्रश्न उठाया जाता है कि धर्म को राजनीति से अलग करना चाहिए तो हमें लोगों के आक्रोश का सामना करना पड़ता है, आवश्यकता इस बात की है कि राजनीति में धर्म और धर्म में राजनीति का हमें स्वस्थ्य स्वरूप निर्धारित करना होगा। डॉ0 लोहिया की मान्यता थी कि–''धर्म और राजनीति का रिश्ता बिगड़ गया है। धर्म दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति अल्पकालीन धर्म। धर्म श्रेय्स की उपलब्धि का प्रयत्न करता है, राजनीति बुराई से लड़ती है। हम आज एक दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति में हैं, जिसमें कि बुराई से विरोध की लड़ाई में धर्म का कोई वास्ता नहीं रह गया है और वह निर्जीव हो गया है, जबकि राजनीति अत्यधिक कलही और बेकार हो गयी है।''[5]

डॉ0 लोहिया की दृष्टि साफ थी, वह धर्म के अन्धानुकरण के सख्त खिलाफ थे, वह चाहते थे कि आवश्यकतानुसार धर्म की समीक्षा एवं पुनर्पाठ करना चाहिए ,तभी वह लोककल्याणकारी हो सकता है। डॉ0 लोहिया चाहते थे कि ईश्वर यूटोपिया और भोग लगाने वाला देवता बनकर न रह जाय बल्कि उसे धरतीमाता में चलने वाला होना चाहिए। आम आदमी के सुखः दुख का साथी होना चाहिए, इसीलिए राम और कृष्ण का वह स्वरूप उन्हें लुभाता है जो लोककल्याणकारी है–'' कृष्ण बहुत अधिक हिन्दुस्तान के साथ जुड़ा हुआ है। हिन्दुस्तान के ज्यादातर देव और अवतार अपनी मिट्टी के साथ सने हुए हैं। मिट्टी से अलग करने पर वे बहुत कुछ निष्प्राण हो जाते हैं। त्रेता का राम हिन्दुस्तान की उत्तर–दक्षिण एकता का देव है। द्वापर का कृष्ण देश की पूर्व–पश्चिम एकता का देव है। राम उत्तर–दक्षिण और कृष्ण पूर्व–पश्चिम धुरी पर घूमें। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि देश को उत्तर–दक्षिण और पूर्व–पश्चिम एक करना ही राम और कृष्ण का धर्म था। यों सभी धर्मो की उत्पत्ति राजनीति से

हैं, बिखरे हुए स्वजनों को इकट्ठा करना, कलह मिटाना, सुलह कराना और हो सके तो अपने और सबकी सीमा को ढहाना। साथ–साथ जीवन को कुछ ऊँचा उठाना, सदाचार की दृष्टि से और आत्म चिंतन की भी दृष्टि से।''[6]

डॉ0 राममनोहर लोहिया के लोकसभा में प्रवेश से पहले लोकसभा हाईस्कूल की कक्षा की तरह चलती थी जिसमें हेडमास्टर के अनुशासन में छात्र विभिन्न विषयों पर सवाल–जबाव करते थे। विपक्ष मुर्दा था। वह सरकार को घेरने की बात तो क्या उससे कोई तीखा सवाल पूछने का साहस भी नहीं करता था। इसलिए समाचार पत्रों ने खासकर अंग्रेजी के अखबारों ने लोकसभा में डॉ0 राममनोहर लोहिया के प्रवेश को ''चीनी वर्तनों की दुकान में सांड़ का प्रवेश''[7] (अंग्रेजी मुहावरा,बुल इन चाइना शॉप) कहा।

डॉ0 राममनोहर लोहिया संसद को जनकल्याण का सदन मानते थे आपकी मान्यता थी कि संसद सदस्यों को शाही खर्च से बचना चाहिए तथा लोगों के सामने सामान्य जीवन का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। उन्होंने सदन में 'तीन आने'[8](बीस पैसे) की बहस की शुरूआत की अर्थात् वह सदन में देश के गरीब से गरीब व्यक्ति की आवाज को पहुचाने के पक्षधर थे। डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचार हमेशा लोगों को सोचने के लिए मजबूर करते थे। डॉ0 वेदप्रताप वैदिक के शब्दों में कहें तो वह लोहिया ही थे, जो नेहरू की दो–टूक आलोचना करते थे। चीनी हमले के बाद लोहिया ने ही नेहरू सरकार को 'राष्ट्रीय शर्म' की सरकार कहा था। उन्होंने ही 'तीन आने' की बहस छेड़ी थी। मानी इस गरीब देश का प्रधानमंत्री खुद पर 25 हजार रूपए रोज खर्च करता है, जबकि आम आदमी 'तीन आने रोज' पर गुजारा करता है। लोहिया ने ही उस समय की अतिप्रशंसित गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति पर प्रश्न चिह्न लगाए थे और नेहरू जी की 'विश्वयारी' पर तीखे व्यंग्यवाण चलाए थे। उन्होंने सरकारी तंत्र के मुगलिया ठाट–बाट की निंदा इतने कड़े शब्दों में की थी कि सारा तंत्र भर्राने लगा था।''[9]

डॉ0 लोहिया अक्सर कहा करते थे कि, ''उन पर केवल ढाई आदमियों का प्रभाव रहा, एक मार्क्स का, दूसरे गाँधी का और आधा जवाहरलाल नेहरू का।' इसमें कोई दो राय नहीं कि डॉ0 लोहिया इन लोगों से प्रभावित भले हों, परन्तु इनका विचार स्वतंत्र अस्मिता और भारत के गरीबनवाज के रूप में पीड़ित जन को समर्पित हैं।

डॉ0 लोहिया एक ऐसे व्यक्तित्व को निर्मित करने में सक्षम हुए, जिन्होंने आम जनता के विरोध में खड़े होनी वाली किसी भी हस्तियों को नहीं बक्शा, वह गाँधी हों, मार्क्स हों या जवाहरलाल नेहरू हों। जब कभी उन्हें लगा कि कोई आजादी की लड़ाई में जनता के शोषण को बढ़ावा दे रहा है, जब अपने तेजस्वी विचारों से जनता को जागृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। डॉ0 लोहिया ने कभी–भी स्वतंत्रता आन्दोलन में समाज के उन तत्वों को नहीं बक्शा, जो भारत को आजाद कराने में स्वार्थ पर आधारित नीतियों का समर्थन करते थे। वे किसी की अनुकृति भी नहीं हो सकते थे। एक ऐसा संत जिसे युग की परिस्थितियों ने योद्धा बना दिया था। अथवा, ऐसा योद्धा, जो संघर्षों में तपते–तपते संत बन गया। लेकिन मनुष्य इतिहास को किसी खास लौह–नियम या विचारों–साँचे में जकड़कर देखते रहने की उनकी कोई इच्छा नहीं रही। इसी कारण लोहिया अनेक नये विचारों के प्रतिपादक और व्याख्याता तो रहे, परन्तु किसी एक बंद विचार–प्रणाली के निर्माता नहीं बने।''[10]

डॉ0 रामनोहर लोहिया भारत के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से साक्षात्कार करते हुए, प्रयास करते रहे कि भारत में आधुनिक जन–राजनीति के साथ–साथ एक सांस्कृतिक–क्रांति का माडल कैसे बनाया जाय, जिसमें पारंपरिक संस्कृति के

मानवतावादी और बौद्धिक तत्त्व एक साथ समाहित हो जायें। देश की जड़ता से उनका आशय धार्मिकता के आवरण में पैठी साम्प्रदायिकता और जाति–व्यवस्था से था, जो एक खास तरीके से धर्म प्रभुत्व की द्योतक थी। यही कारण था कि वह एक सच्चे समाजवादी थे। कोई भी निर्णय लेने से पहले वह सोचते थे कि क्या इससे दबे–पिछ़डे लोगों के जीवन में बदलाव आएगा कि नहीं। डॉ0 राममनोहर लोहिया ने जिस समतापूर्ण समाज की कल्पना की थी, इसे रहस्य(*The secreat)*[11] नामक वैचारिक चलचित्र में आये तीन मूल्यों से प्राप्त किया जा सकता है। ये मूल्य समाज में रचनात्मक प्रक्रिया को व्यक्तिशः अपनाकर परिवर्तन हेतु हमें विवश कर सकते हैं। ये मूल्य हैं–1. प्रश्न करें। 2. विश्वास करें। और 3. प्राप्त करें।

सर्वप्रथम समाज में निवास करने वाले लोग स्वयं से प्रश्न करें कि जो हम भेदभाव पूर्ण व्यवहार कर रहें हैं, वह समाज सापेक्ष है या समाज निरपेक्ष। यह प्रश्न व्यक्ति के माध्यम से सार्वजनिक फल की प्राप्ति में संभव हो सकता है। दूसरी बात यदि समाज में अविश्वास की भावना व्याप्त है, तब सामाजिक सरोकार इसी में निहित है कि हम एक दूसरे पर विश्वास करें। तभी सम्पन्न समाज की प्राप्ति स्वतः हो सकती है। इन मूल्यों से निर्मित और पुनर्निधारित सामाजिक परिवेश में किसी भी वर्ग का व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह सहजतापूर्वक कर सकता है। लेकिन भारत जननी का इतना बड़ा दुर्भाग्य है कि–समाज के विकास के नाम पर विनाश की गाथा गढ़ने में तथा कोई भी व्यक्ति अपने मानुषिक स्वभाव के विपरीत सामाजिक ढांचे को गिराने में अपनी पूरी शक्ति लगा दे रहा है। इसी कारण डॉ0 लोहिया यह अहसास करते थे कि–घूम–फिर करके हर मामला स्वनिर्माण और सर्वनिर्माण में टक्कर लेता है। इस टक्कर के बिना कुशलक्षेम भी नहीं। स्थिति इतनी बिगड़ गयी है कि परमार्थ के बिना आज कोई अच्छा स्वार्थ नहीं सध सकता। किन्तु राष्ट्रीय मन इतना बिगड़ चुका है कि हर आदमी अपने हिस्से को बढ़ाना संभव और सहज समझता है और कुल भंडार को बढ़ाना कठिन। इसीलिए किसी भी ठोस कार्यक्रम में ऐसी क्षमता होनी चाहिए कि वह असरदार ढंग से स्वार्थ को धकेले और परमार्थ को बढ़ाये। ''भारत के समाजवाद का... वर्षों में यही सबसे बड़ा पाप रहा है, उस समाजवाद का जो गद्दी पर या उससे नजदीक रहा है। इस समाजवाद ने खाली नाम जप किया है, जनतंत्र का, बराबरी का, इहवाद का, राष्ट्रीयता का, अन्तर्राष्ट्रीयता का, क्रांतिकारिता का, किन्तु कभी कोई कोशिश नहीं की कि इन सिद्धांतों का ठोस धागा काते और ऐसे ठोस धागों से सिद्धान्तों का ताना–बाना बुनता रहें। उलट, जबकि यह खुद नितांत खाली और बेमतलब रहा है, उसने हर समाजवादी प्रयत्न में सिद्धान्त और ठोस के लेन–देन को सिद्धांतविहीन बताया।''[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शरद ओंकार (संपादक)–लोहिया राममनोहर–भारतमाता धरती माता, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–123
2. शरद ओंकार (संपादक)–राममनोहर लोहिया–भारतमाता धरती माता, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–29
3. पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.), पृष्ठ–149
4. शरद ओंकार (संपादक)–लोहिया के विचार,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,संस्करण 1990,पृष्ठ–11
5. शरद ओंकार (संपादक)–राममनोहर लोहिया–भारतमाता धरती माता, लोकभारती ,प्रकाशन इलाहाबाद,पृष्ठ–9

6. शरद ओंकार (संपादक)–राममनोहर लोहिया–भारतमाता धरती माता, लोकभारती,प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–36–37
7. कपूर मस्तराम–लोकसभा में लोहिया–संपादक–अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0 लि0,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली – 110002, संस्करण – 2013,पृ013
8. कपूर मस्तराम–लोकसभा में लोहिया–संपादक–अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0 लि0,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली – 110002, संस्करण – 2013,पृ0 13
9. वैदिक वेदप्रताप–यह लोहिया की सदी हो, दैनिक भास्कर–सतना (म.प्र.) संस्करण,मंगलवार, 23 मार्च 2010
10. मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली,पृष्ठ–129
11. *The Secret Film, www.Thesecret.tv* (रहस्य)
12. शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996, पृष्ठ–146